HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCE REVIEW

(An International Peer Reviewed Refereed Journal)

Editor in Chief

Dr. Vinay Kumar Pandey

Associate Professor
Faculty of S.V.D.V.
Banaras Hindu University, Varanasi

15.	ग्रहों का भूमण्डल एवं मानव जीवन पर प्रभाव	डॉ0 विनय कुमार पाण्डेय	99
16.	वेदों में दार्शनिक तत्त्व : एक विवेचन	डॉ0 उमेश कुमार तिवारी	104
17.	प्रसाद की नाट्य–दृष्टि	डॉ0 अखिलेश कुमार दुबे	109
18.	मुगलकालीन अप्रचलित नागर शैलियां	डॉ0 प्रेम किशोर मिश्र	113
19.	ज्योतिषशास्त्र का वैज्ञानिक स्वरूप	प्रो0 सच्चिदानन्द मिश्र	116
20.	वैदिक एवं बौद्धकालीन वर्णव्यवस्था	डॉ0 नीरज तिवारी	126
21.	मेरु की भौगोलिक स्थिति	विक्की शर्मा	136
22.	जैन मत के अनुसार अणुव्रत	डॉ0 संगीता सिंह	142
23.	'उपनिषदों के आलोक में शिक्षित मानव की अवधारणा'	हीरा पाण्डेय	150
24.	नैषधीयचरित में नल के परिप्रेक्ष्य में वीररस निरूपण	जितेन्द्र कुमार तिवारी	160
25.	भुवनेश्वर की मूर्तियों में संगीत का अंकन	अलका गिरि	164
26.	गंगा का ऐतिहासिक परिदृश्य और महत्त्व	गणेश चन्द्र पलगाईं	172
27.	धन का महत्त्व एवं ज्योतिषकारक	लोकेश्वर शर्मा	179
28.	हिन्दी आलोचना का विकास	सत्यप्रकाश पाल	187
29.	गोभिल गृह्यसूत्रानुसार वस्तु का स्वरूप	इन्द्रबली मिश्रा	192
30.	अंग विद्या में स्वर लक्षण एवं महत्त्व	बजरंग कुमार चतुर्वेदी	196
31.	श्रीमद्भगवद्गीता का मूल्य परक परिशीलन	अमरेश कुमार मिश्र	201
32.	वीरशैव मत में लिंगांग संयोग विधि	कृष्णानन्द सिंह	205
33.	ज्योतिष एवं जलवायु विज्ञान	दुर्गेश कुमार शुक्ल	209
34.	मानवता के प्रतिमान : महामना पं0 मदन मोहन मालवीय	हरीश कुमार	215
35.	अद्वैत दर्शन में माया का स्वरूप एवं लक्षण	संदीप कुमार सिंह	219
36.	वास्तुशास्त्र में भूमि परीक्षण	बबलू मिश्र	225
37.	अराजक, शोषित एवं नारी–उत्थान : श्रीमद्भागवत के संदर्भ में	डॉ0 चन्द्रशेखर सिंह	231

Vol.2, No.1, HSS REVIEW (2015), 164-171

भुवनेश्वर की मूर्तियों में संगीत का अंकन

अलका गिरि +

संगीत मानव हृदय की विभिन्न भावनाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। मानव अपनी प्रत्येक अनुभूति तथा संवेग का प्रस्तुतीकरण संगीत द्वारा आदिकाल से करता आ रहा है। जन्म से मरण तक–प्रत्येक अवसर पर संगीत मानव का साथी रहा है यही कारण है कि शिल्पियों ने अपनी प्रतिभा द्वारा विभिन्न माध्यमों से संगीत को मूर्त रूप देने का प्रयास किया है। मूर्तिकला, चित्रकला, काव्यकला इत्यादि कला की कोई भी विधा संगीत से अछूती नहीं रही है। संगीत भारतीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उपस्थित है। माँ अपने बच्चे को लोरी गाकर सुलाती है। भक्तगण प्रभु की पूजा भजन तथा कीर्तन गाकर करते हैं। मानव जीवन के विभिन्न संस्कारों जातकर्म, चूड़ाकरण, यज्ञोपवीत, पाणिग्रहण इत्यादि का संगीत के बिना सम्पन्न होना असम्भव है।

नाविक नाव खेने का मजदूर बोझा ढोने का श्रम संगीत की लय में भूल जाते हैं। मनोरंजन की तो संगीत के बिना कल्पना ही अधूरी है। संगीत सुख में ही नहीं दुःख तथ शोक में भी मानव का साथी रहा है। परिवार के वृद्धजनों की शव–यात्रा में नगाड़ा तथा घण्टा बजाने का प्रचलन पूर्वी उत्तर प्रदेश की निम्न जातियों (डोम, अहिर इत्यादि) में मिलना इसका स्पष्ट प्रमाण है।[1] दक्षिण भारत की अय्यर जाति में परिवार के वृद्ध विधुर की मृत्यु हो जाने पर सम्मिलित स्त्रियाँ नृत्य करती हैं।[2]

उड़ीसा से प्राप्त विभिन्न अभिलेख तत्कालीन समाज की संगीत सम्बन्धी रूचि पर प्रकाश डालते हैं। मन्दिर में प्रतिष्ठित देवता की पूजा तथा अर्चना के लिए शासक वर्ग द्वारा संगीत में निपुण स्त्रियों को समर्पित करने की प्रथा थी। नरसिंह प्रथम द्वारा सिंहाचलम मन्दिर में एक सहस्त्र गायिकाओं के अर्पित करने का सन्दर्भ मिलता है।[3] भुवनेश्वर के ब्रह्मेश्वर मंदिर के अभिलेख के अनुसार ब्रह्मेश्वर मंदिर के निर्माणकर्त्री रानी कोलावती ने देवपूजा के लिए संगीत और नृत्य में निपुण सुन्दर देवदासियों की नियुक्ति की थी।[4] गंग नरेश उदयगिरि के हाथी गुम्फा अभिलेख के अनुसार उड़ीसा का चेदि शासक खारवेल गायन तथा नृत्य दोनो में निपुण था।[5]

संगीत के तीनों अंगो गायन, वादन तथा नृत्य का अंकन भुवनेश्वर के देवालयों की मूर्तियों में बाहुल्यता के साथ हुआ है। विभिन्न हाव–भाव तथा भंगिमाओं द्वारा गायन कला की अभिव्यक्ति का भी प्रयास किया गया है।[6] विभिन्न वाद्यों तथा

+ एस.आर.एफ., शोध छात्रा (नृत्य विभाग), संगीत एवं मंचकला संकाय, का.हि.वि.वि., वाराणसी

नृत्य भंगिमाओं का अंकन संगीत की समृद्ध परम्परा का द्योतक है। प्रमुखतः संगीत विषयक अंकन गर्भगृह तथा जगमोहन की वाह्य भित्तियों पर है।

संगीत सम्बन्धित दृश्यों में अंकित स्त्री–पुरुष आकृतियाँ 2 इंच से लेकर 32 इंच तक ऊँची है जो वाद्य वादन करती अथवा नृत्य की मुद्राओं को प्रदर्शित करती हैं मुक्तेश्वर, राजारानी, ब्रह्मेश्वर तथा लिंगराज मन्दिरों पर उत्कीर्ण स्त्री आकृतियां लगभग 32 इंच ऊँची हैं।

भुवनेश्वर के देवालयों में संगीत सम्बन्धी दृश्यांकन छठी शती ई० के शत्रुघ्नेश्वर मन्दिर समूह से लेकर 14 वीं शती ई० के कपिलेश्वर मन्दिर तक समस्त मन्दिरों पर हुए हैं। छठीं शती ई० से 8 वीं० शती ई० तक प्रमुखतः : नटराज[7] वीणाधर शिव[8] तथा शिव विवाह इत्यादि धार्मिक आख्यानों से सम्बन्धित मूर्तियों और दृश्यों में ही संगीत का अंकन हुआ है। सर्व प्रथम 10 वीं शती ई० के मुक्तेश्वर मन्दिर पर स्वतन्त्र रूप में स्त्री संगीतकारों का अंकन मिलता है। स्पष्ट है कि समाज में संगीत की लोकप्रियता में वृद्धि हुई तथा स्त्रियां नृत्य के अतिरिक्त तत्कालीन विविध वाद्यों के वादन में भी रूचि लेने लगी। चित्रकारिणी मन्दिर के जगमोहन की बरण्ड पर नृत्य की मुद्राओं का प्रदर्शन करती स्त्री–पुरुष आकृतियों का अंकन है।

नाट्यशास्त्र में वर्गीकृत वाद्यों के आधार पर भुवनेश्वर के देवालयों की भित्तियों पर उत्कीर्ण वाद्ययन्त्रों को निम्नलिखित चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।[9]

क. तत् **ख. अवनद्ध** **ग. घन** **घ. सुषिर**

ततं तन्त्रीकृतं ज्ञेयमवनद्धं तु पौष्करम्।

घनं तालस्तु विज्ञेयः सुषिरो वंश उच्यते।।

(ना०शा०/28/1 मधु.शास्त्री पेज नं० –614)

(क) तत् वाद्य– तार अथवा तन्त्र के आन्दोलित करने पर संगीतात्मक ध्वनि उत्पन्न करने वाले वाद्य तत् अथवा तन्त्र वाद्य समूह के अन्तर्गत आते हैं। वैदिक साहित्य में तंत्र वाद्यों के लिये वीणा शब्द का प्रयोग किया गया है।[9] वैदिककाल में निम्नलिखित तंत्र वाद्य प्रचलित थे– तालुक वीणा, काण्डा वीणा, पिच्छोरा, अलाबु वीणा तथा कपिशीर्ष वीणा।[10] नाट्यशास्त्र में चार प्रकार की वीणा का विवरण है– चित्रवीणा– इसमें सात तार होते थे तथा इसे उंगलियों से बजाया जाता था, नौ तार वाली विपंची वीणा कोण से बजाते थे, कच्छपी व घोषक सम्भवतः एक प्रकार का वर्तमान तानपूरा था।[11]

भुवनेश्वर के मन्दिरों की मूर्तियों में वीणा का बहुसंख्यक अंकन प्राप्त होता है। स्त्री तथा पुरुष दोनों ही आकृतियां वीणा बजाते हुए प्रदर्शित हैं। किन्तु पुरुषों की अपेक्षा स्त्री आकृतियों की संख्या अधिक है। मुक्तेश्वर मन्दिर परिसर की भित्ति

पर पद्मासन में बैठी स्त्री वीणा बजाती अंकित है। प्रस्तुत मन्दिर के जगमोहन वितान पर अंकित फलक में वीणा की धुन पर नृत्य करती स्त्री आकृति उत्कीर्ण है।

देवालयों की भित्तियों पर उत्कीर्ण वीणा के उदाहरणों से इसके स्वरूप का पता चलता है। प्रस्तुत वाद्य में एक दण्ड पर तार बन्धे रहते थे, तथा दण्ड के एक अथवा दोनों सिरों पर गोलाकार तुम्बे रहते थे।

भुवनेश्वर के देवालयों की भित्तियों पर निम्नांकित प्रकार की वीणा के उदाहरण मिलते हैं–

1. एक तुम्बे वाली वीणा
2. दो तुम्बे वाली वीणा
3. पर्दे वाली वीणा

भुवनेश्वर के देवालयों की भित्ति पर आधुनिक वाद्य तानपूरा के समान वाद्य का अंकन भी मिलता है शत्रुघ्नेश्वर मन्दिर पर अंकित प्रस्तुत वाद्य में दण्ड के नीचले सिरे पर एक तुम्बा तथा ऊपरी सिरे पर तीन खूटियां प्रदर्शित हैं। लिंगराज मन्दिर के नाट्य मण्डप में उत्कीर्ण एक स्त्री आकृति को तानपूरे के समान वाद्य लिये हुए दर्शाया गया है।

भुवनेश्वर की मूर्तियों में वीणा व तानपुरे का अंकन

अवनद्ध वाद्य–

ऐसे वाद्य जिनका मुख चर्म द्वारा मढ़ा हो, आनद्ध वाद्य कहलाते हैं। चर्म पर डण्डा अथवा कोण के आघात से ध्वनि उत्पन्न होती है भारतीय साहित्य में विभिन्न प्रकार के आनद्ध वाद्यों का उल्लेख मिलता है। रामायण[12] में गडडुक, मृदंग तथा पटह एवं महाभारत में मृदंग का सन्दर्भ मिलता है[13]। पाणिनि ने मृदंग, गडडुक डमरु का उल्लेख किया है[14] यजुर्वेद में मृदंग वादक का उल्लेख मिलता है।[15]

नाट्यशास्त्र में लकड़ी से बने आनद्ध वाद्यों का सामान्य नाम पुष्कर था।" भुवनेश्वर के देवालयों पर भी विभिन्न प्रकार के आनद्ध वाद्यों –मृदंग, डफ, डमरू बजाती स्त्री–पुरुष आकृतियां प्रदर्शित है। भुवनेश्वर के छठी शती ई0 से 14 वी शती ई0 के प्रायः समस्त मन्दिरों पर अवनद्ध वाद्यों का अंकन हुआ है। भुवनेश्वर के मन्दिरों की भित्तियों पर अनेक प्रकार के अवनद्ध वाद्य जैसे– मृदंग, ढोलक, डफ, डमरू उत्कीर्ण किये गये है।

1. मृदंगः– मृदंग का अंकन भुवनेश्वर में ब्रह्मेश्वर मन्दिर के जगमोहन के गवाक्ष पर स्त्री आकृति के गले मे लटकता हुआ प्रदर्शित है।

भुवनेश्वर की मूर्तियों में मृदंग का अंकन

2. **डफ–** प्रस्तुत वाद्य चक्राकार होता है जिसमें एक ओर चमपत्र कसा रहता है। इसे बाये हाथ से पकड़ कर दाहिने हाथ से बजाते है। यह एक प्राचीन वाद्य है जिसका नामोल्लेख पटह के रूप में रामायण तथा अन्य परवर्ती ग्रन्थो में मिलता है।"

भुवनेश्वर के देवालयों की भित्ति पर इसका अंकन भुवनेश्वर तथा लिंगराज मन्दिरों पर हुआ है। सभी मन्दिरों पर पुरुष आकृतियां ही डफ बजाती अंकित है।

4. डमरू–डमरू का अंकन सामान्य दृश्यो में नही मिलता। इसका आकार दोनों सिरों पर चौड़ा तथा मध्य में पकड़ने के स्थान पर संकरा होता है कभी–कभी पकड़ने के लिए डमरू से एक दण्ड भी संलग्न होता है। भुवनेश्वर में डमरू का चित्रण शिव प्रतिमा तथा अन्य शैव प्रतिमाओं यथा–कार्तिकेय तथा योगिनी आकृति में हुआ है।

ग. **सुषिर वाद्य–** छिद्र युक्त या फूक कर बजाये जाने वाले वाद्य सुषिर वाद्य कहलाते है। भुवनेश्वर में सुषिर वाद्यों के अन्तर्गत शंख, वंशी तथा तूर्य का प्रस्तुतीकरण हुआ है।

1. **शंख–** यह प्राचीन वाद्य है वैदिक साहित्य में भी इसका उल्लेख प्राप्त होता है। महाकाव्यो मे इसे युद्ध वाद्य के रूप मे उल्लेखित किया गया है।

2. वंशी– प्राचीन काल से ही सर्वाधिक लोकप्रिय सुषिर वाद्य वंशी है। भुवनेश्वर के देवालयों की आकृतियों में वंशी तथा बांसुरी दोनो को प्रदर्शित किया गया है। वंशी का अंकन नृत्य दृश्यों में मृदंग वादन के साथ तथा स्वतंत्र वादन के रूप में भी हुआ है। वंशी के साथ मन्जीरा वादन भी प्रचलित था। परशुरामेश्वर मन्दिर से लेकर 13 वी शती ई0 के चित्रकारिणी मन्दिर तक वंशी बजाती स्त्री–पुरूष आकृतियों का अंकन मिलता है।

भुवनेश्वर में बांसुरी का अंकन राजारानी मन्दिर तथ कोटि तीर्थेश्वर मन्दिर की द्वारशाखा पर हुआ है। इन मन्दिरों पर पुरूष आकृतियाँ खड़े होकर बांसुरी बजाते हुई प्रदर्शित हैं।

भुवनेश्वर की मूर्तियों में बांसुरी व वंशी का अंकन

घ. घन वाद्य– इस वर्ग के वाद्यों में दो वस्तुओं के आघात से संगीतात्मक ध्वनि उत्पन्न होती है। भुवनेश्वर में घनवाद्यों के अन्तर्गत मंजीरा, घण्टा, करताल, घण्टताल का अंकन किया गया है।

1 **मंजीरा–** मंजीरे में धातु –निर्मित दो छिछले पात्र होते हैं जिनको परस्पर टकराने से संगीतात्मक ध्वनि उत्पन्न होती है। भुवनेश्वर के मन्दिरों में स्त्री –पुरूष आकृतियाँ मंजीरा बजाती अंकित हैं इन आकृतियों को देखने से ज्ञात होता है मंजीरा नृत्य दृश्यों में मृदंग आदि वाद्यों तथा वंशी के साथ बजाया जाता था।

2 **झांझ** – इस वाद्य में धातु निर्मित चौड़ी चपटी दो तश्तरियां होती हैं जो आपस में टकराने से ध्वनि उत्पन्न करती हैं।

भुवनेश्वर के मन्दिरों में इस वाद्य का एकमात्र अंकन ब्रह्मेश्वर मन्दिर (11 वीं शती ई0) पर पीढ़ा देउल लिये नृत्य करती नर्तकी के साथ अंकित वाद्यों में हुआ है।

3. **करताल** – इस वाद्य में लकड़ी के दो लम्बाकार चपटे टुकड़े होते हैं जिन्हें टकराने से ध्वनि उत्पन्न होती है। इन टुकड़ों में अंगुली फंसाने का छेद

बना रहता है। इन छेदों में अंगुली फंसाकर इस वाद्य को बजाते हैं। भुवनेश्वर में इस वाद्य का अंकन ब्रह्मेश्वर तथा लिंगराज मन्दिर की आकृतियों में हुआ। ब्रह्मेश्वर मन्दिर पर एक नर्तकी अपने हाथों में करताल पकड़े नृत्य कर रही है।[15] लिंगराज मन्दिर पर एक पुरुष आकृति हाथ में करताल लिये अंकित है।[16]

८. **घण्टा** –यह चक्राकार धातु निर्मित वाद्य है जिसे लकड़ी की छोटी छड़ी द्वारा बजाते हैं। भुवनेश्वर में घण्टा बजाती पुरुष आकृतियों का प्रदर्शन लिंगराज तथा चित्रकारिणी मन्दिरों पर हुआ है।

९. **घटम** – सामान्य घट को अंगुलियों से बजाते हैं। कर्नाटक संगीत में इसे ताल वाद्य के रूप में मान्यता प्राप्त है। भुवनेश्वर के विभीषण मन्दिर पर अंकित लोकनृत्य के दृश्य में घटम् बजाती स्त्री आकृति उत्कीर्ण है।

ब्रह्मेश्वर मन्दिर में नर्तकी झांझ बजाती हुई

नृत्य :–

भुवनेश्वर के मन्दिरों पर नृत्य की विभिन्न मुद्राएं प्रदर्शित करती स्त्री–पुरुष आकृतियाँ अंकित हैं। इस दृष्टि से परशुरामेश्वर, मुक्तेश्वर, राजारानी, ब्रह्मेश्वर चित्रकारिणी तथा कपिलेश्वर मन्दिर विशेष उल्लेखनीय हैं। मन्दिरों पर उत्कीर्ण नृत्य की मुद्राएं तथा भाव–भंगिमाएं उड़ीसा के शास्त्रीय नृत्य ओडिसी से पर्याप्त साम्यता रखती हैं। शत्रुघ्नेश्वर समूह के मन्दिरों पर शिव की नृत्यमूर्ति का अंकन किया गया।[18] इसके अतिरिक्त शिव की वर–यात्रा तथा शिव–विवाह के प्रसंगों में भी नृत्य करती आकृतियों का प्रदर्शन है। मुक्तेश्वर मन्दिर पर धार्मिक प्रसंगों यथा–नृत्त गणेश प्रतिमा के अतिरिक्त सामाजिक परिदृश्यों में भी नृत्य का अंकन किया गया है।

भुवनेश्वर के मन्दिरों पर अंकित स्त्री–पुरुष आकृतियों की भंगिमाएं ओडिसी नृत्य की भंगिमाओं के समान है। ओडिसी नृत्य में शरीर की त्रिभंग अवस्था पर विशेष बल देते हैं।[19] लिंगराज मन्दिर परिसर से प्राप्त नर्तक मूर्ति त्रिभंग, स्वस्तिक पाद तथा लतेहस्त को दर्शाती हुई अंकित है।[20] नृत्य करती स्त्री–पुरुष आकृतियों के

अतिरिक्त अलस कन्याओं की आकृतियाँ भी नृत्य की विभिन्न भंगिमाओं में निर्मित है यथा– राजारानी मन्दिर की अलसकन्या निवृत्त कटि तथा स्पन्दित चारी, इसी मन्दिर की शुक–सारिका स्वस्तिक पाद एवं राजा रानी मन्दिर की कुण्डना उत्प्लवित चारी का प्रदर्शन कर रही है।[19]

भुवनेश्वर के चतुर शिल्पियों ने आकृतियों के निर्माण में नृत्य के शास्त्रीय पक्ष के साथ शिल्प शास्त्र का भी अनुसरण किया है। भुवनेश्वर में नृत्य दृश्यों का अंकन स्वतंत्र तथा समूह दोनों रूप में हुआ है। सामान्यतः पुरुष समूह–नृत्य तथा स्त्रियाँ स्वतंत्र नृत्य करती थी। भुवनेश्वर में अंकित नृत्य दृश्यों में अभिनय चन्द्रिका में उल्लिखित ओडिसी नृत्य के वाद्य मार्दल (मृदंग), वंशी तथा गिन्नी (मंजीरा) प्रदर्शित है।मुक्तेश्वर मन्दिर के जगमोहन वितान के एक नृत्य फलक पर वंशी के स्थान पर वीणा प्रदर्शित है।

परशुरामेश्वर मन्दिर में नृत्यरत स्त्री प्रतिमा राजारानी मन्दिर में नृत्यरत स्त्री प्रतिमा

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि भुवनेश्वर के मन्दिरों पर शिल्पी द्वारा केवल अपनी कल्पना अथवा योग्यता के आधार पर ही संगीत, नृत्य के दृश्यों का उत्कीर्ण नहीं हुआ है। वरन् इनके अंकन में शास्त्रीय परम्पराओं का पालन किया गया है। वाद्यों के प्रस्तुतीकरण में शिल्पी ने उन्हीं वाद्यों का अंकन किया है जो शास्त्रों में उल्लिखित है। संगीत नृत्य के दृश्यों में सामाजिक परिवेश तथा इस क्षेत्र में संगीत के विकास का भी पता चलता है। कुछ वाद्यों का वादन केवल पुरुष वर्ग द्वारा ही किया जाता था जो संगीत के क्षेत्र में उनकी श्रेष्ठता का द्योतक है। इसी प्रकार कुछ वीणा के वादन में स्त्रियों को दक्षता प्राप्त थी। संगीत आयोजनों के दृश्यांकन तत्कालीन जनमानस में संगीत के महत्व का परिचायक है।

नृत्य के अंकन में आकृतियों के माध्यम से मूलतः नाट्यशास्त्र में वर्णित मुद्राओं तथा भावों का प्रदर्शन हुआ है। इस प्रकार संगीत का दृश्यांकन केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं वरन् शास्त्रीय परम्पराओं से जनमानस के परिचित होने का भी प्रमाण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. नीरजा मिश्रा, भुवनेश्वर की मूर्तियां–एक सांस्कृतिक अध्ययन, पृ0सं0–170
2. कपिला वात्स्यायन, क्लासिकल इण्डियन डान्स इन लिटरेचर एण्ड आर्टस दिल्ली 1968 पृ0 173
3. नीरजा मिश्रा, भुवनेश्वर की मूर्तियां–एक सांस्कृतिक अध्ययन, पृ0सं0–171
4. नीरजा मिश्रा, भुवनेश्वर की मूर्तियां–एक सांस्कृतिक अध्ययन, पृ0सं0–171
5. वही.........
6. लिंगराज मन्दिर, गर्भगृह, तल जंघा, भुवनेश्वर की मूर्तियां–एक सांस्कृतिक अध्ययन, नीरजा मिश्रा पृ0सं0 172
7. परशुरामेश्वर, मारकण्डेश्वर, बैताल देउल मन्दिर के गर्भ गृह शिखर, भुवनेश्वर की मूर्तियाँ–एक सांस्कृतिक अध्ययन, नीरजा मिश्रा पृ0सं0 175
8. परशुरामेश्वर मन्दिर शिखर ।
9. नाट्यशास्त्र अध्याय–28 श्लोक संख्या–1 मधुसूदन शास्त्री
10. नीरजा मिश्रा, भुवनेश्वर की मूर्तियां–एक सांस्कृतिक अध्ययन, पृ0सं0–174
11. नाट्यशास्त्र मनमोहन घोष, ख0.2, पृ0सं0 162
12. रामायण सुन्दरकाण्ड,10/40
13. महाभारत शान्तिपर्व, 53/4
14. नीरजा मिश्रा, भुवनेश्वर की मूर्तियां–एक सांस्कृतिक अध्ययन, पृ0सं0–17
15. कपिला वात्स्यायन, क्लासिकल इण्डियन डान्स इन लिटरेचर एण्ड आर्टस दिल्ली 1968, पृ0 176
16. नाट्यशास्त्र मनमोहन घोष, पृ0सं0 162 पाद टिप्पणी 101
17. रामायण सुन्दरकाण्ड,10/38
18. शत्रुघ्नेश्वर मन्दिर गर्भगृह बाह, परशुरामेश्वर मन्दिर गर्भगृह प्रकोष्ठ के उत्तरंग पर
19. नीरजा मिश्रा, भुवनेश्वर की मूर्तियां–एक सांस्कृतिक अध्ययन, पृ0सं0–190
20. डॉ आभा मिश्रा, मोढेरा के सूर्य मन्दिर की मूर्तियों में सांस्कृतिक जीवन, 2004,पृ.सं. 159
21. कपिला वात्स्यायन, क्लासिकल इण्डियन डान्स इन लिटरेचर एण्ड आर्टस दिल्ली 1968 पृ0 355
22. छायाचित्र–www.google.co.in/search

❀❖❀